NH Notes – 15

जब मेरा दिल्ली एम.बी.ए. में दाखिला हुआ तो मेरी दादी ने मेरे को दो बात पल्ले बाँध के भेजा था!

1) दिल्ली पूरे देश के साथ हमारे हरियाणा की प्राचीन राजधानी भी रही है, इसलिए दिल्ली आज भी **'हरियाणा की बहु'** कहलाती है; और वहाँ की मूल संस्कृति हमारी ही संस्कृति है| दिल्ली देश के दूसरे राज्यों से आने वालों के लिए अनजाना या पराया घर होगा, तुम्हारे लिए तो ऐसे है जैसे अपने घर से निकल के साथ लगते चाचा के घर चले जाओ| इसलिए वहाँ कोई भी ऐसा काम मत करना कि जिससे मुझे कल को सुनने को मिले कि "दिल्ली में दो जाटों के जूत बाज गए", फिर चाहे वो लड़की को ले के हो अथवा चौधर को ले के अथवा बेशक किसी भी तरह की धींगामस्ती को ले कर ही क्यों ना हो|

2) जाट निर्भीक और लड़ाई में सर्वोत्तम होते हैं, तुम वहाँ यह साबित करने नहीं जा रहे हो, यह गुण तुम्हारा जन्मजात एसेट (asset) है| तुम वहाँ तुम्हारा सदियों पुराना वंशानुगत स्वछंद भाईचारा, सहनशीलता, समरसता और सद्भाव का चरित्र साबित करने जा रहे हो, सिर्फ इस पर ध्यान रखना| कोई तुम्हें धमकाने भी आये तो यह सोचना कि जैसे सांप इंसान को इसलिए काटने को नहीं दौड़ता कि सांप वीर या निर्भीक होता है अपितु वह अपनी स्व-रक्षा हेतु तुम्हें काटने को दौड़ता है, इसलिए तुम्हें उस पर उल्टा हमला नहीं करना, सिर्फ उसके जहर से अपना बचाव करके अपना रास्ता बनाना और उसपे चलना है; बाकी सांप तो राहगीर की राह में आनी-जानी चीज है| याद रखना महाराजा सूरजमल और सर छोटूराम, इन्होनें दुश्मन को मारने हेतु कभी हथियार नहीं उठाये; बस यह अपनी राह चलते गए| एक **एशिया का प्लूटो (Pluto) व् ओडिसी (Odyssey)** कहलाया तो दूसरा अपने जीते-जी प्राचीन पंजाब में जिन्ना-गांधी-नेहरू की तिगड़ी की एक ना चलने देने वाला **'रहबर-ए-हिन्द'**| जिन्ना को तो सर छोटूराम ने गांधी के पास मुंबई चलता कर दिया था, कि जा वहाँ और वहीं कर अपनी यह साम्प्रदायिक राजनीति, ख़बरदार जो मेरे पंजाब के टुकड़े करने की सोची भी तो| और काश वो देश को आज़ादी मिलने तक जी गए होते तो 1947 में पंजाब के दो टुकड़े ना हुए होते|

और यह बातें आज भी मेरे साथ चलती हैं|

लेखक: फूल मलिक

Publisher: Nidana Heights

Date: 06/01/2015